जिनवाणी स्तुति

अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्दों अर्थों की ।
आगम शास्त्र पठन पाठन में, हम सब भक्तों की ।।
सरस्वती माँ हर त्रुटियों की , क्षमा चाहते हैं।
हमको केवलज्ञान दान दो, भक्ति चाहते हैं

हे श्रुतदेवी ! चिंतामणि सम, चिंतित वस्तु दो ।
वंदन करने वाले हमको, बोधि समाधि दो ।।
निज स्वरूप परिणाम विशुद्धि धर्म चाहते हैं।
मिले मोक्ष सुख सिद्धि संपदा, 'सुव्रत' ध्याते हैं।।

अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्द रेफ या अर्थों की ।
शास्त्र पठन- पाठन में जो भी , कमियाँ रहीं अनर्थों की ।।
आलस भूल कषायें मेरी, क्षमा करें कल्याणी माँ ।
ज्ञान – दीप जलवाकर मेरा, भला करें जिनवाणी माँ ।।

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना ।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना।।
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों ।।

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ ।
आगम – विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ ।।
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान ।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान ।।
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न ।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य ।।

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ , मंत्र जपें नौ बार ।।